राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर

राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर की स्थापना दिनांक 19 अगस्त, 2008 को प्रदेश में कृषि एवं संबध्द विज्ञान में शिक्षा, अनुसंधान एवं विस्तार सेवाएं के लिये हुई है। विश्वविद्यालय में कुलपति, कुलसचिव, लेखानियंत्रक व अधिष्ठाता कृषि संकाय, संचालक अनुसंधान विस्तार, शिक्षण के पद स्वीकृत हैं। प्रदेश के महाविद्यालय एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, आंचलिक अनुसंधान केन्द्र एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, जो इस विश्वविद्यालय के अंतर्गत् कृशि जलवायु क्षेत्र में संचालित है, कृषि शिक्षा अनुसंधान एवं विस्तार का कार्य संपादित कर रहे है । यह विश्वविद्यालय मध्य भारत, मालवा एवं निमाण क्षेत्र में कृषि उत्पादन, उत्पादकता एवं टिकाऊ, कृषि उत्पादन में वृद्धि के अतिरिक्त ग्रामीण जीवन शैली की गुणवत्ता के समग्र विकास हेतु संकल्पित है ।

विश्वविद्यालय के कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत 04 कृषि महाविद्यालय, 01 उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर, **01 पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, महू (दिनांक 03.11.2009 तक इस विश्वविद्यालय के अधीन),** 05 आंचलिक कृषि अनुसंधान केन्द्र, 04 क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र, 01 कृषि अनुसंधान केन्द्र, बागवई, ग्वालियर, 01 फल अनुसंधान केन्द्र, ईंटखेड़ी, भोपाल, 01 उद्यानिकी अनुसंधान केन्द्र, जॉवरा (रतलाम), 01 लवणीय प्रभावित मृदा कृषि अनुसंधान केन्द्र, बड़वाह, खरगौन, **01 पशुचिकित्सा एवं पशुपालन अनुसधान केन्द्र, महू (दिनांक 03.11.2009 तक इस विश्वविद्यालय के अधीन)** एवं 19 कृषि विज्ञान केन्द्र (लहार सहित) जो प्रदेश के 25 जिलों में विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में कार्यरत् है ।

राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्व विद्यालय एवं विश्वविद्यालय पशु चिकित्सा एवं पशुपालन संकाय के लिये कुल 361 पद स्वीकृत हैं।

<u>न्यायालयीन प्रकरण</u>

माननीय उच्च न्यायालय मे वर्ष 2008–2009 के दौरान इस विश्वविद्यालय के विरुद्ध दायर किये गये कुल प्रकरणो की संख्या	:	05
माननीय उच्च न्यायालय में विचाराधीन प्रकरणों की संख्या	:	04
माननीय उच्च न्यायालय द्वारा निराकृत प्रकरणों की संख्या	:	01

1. शैक्षणिक

(अ) कृषि एवं उद्यानिकी

विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस 19 अगस्त 2008 से ही शिक्षण कार्य निरंतर प्रगति पर अग्रेषित है। इस विश्वविद्यालय द्वारा कृषि, उद्यानिकी तथा पशुचिकित्सा में स्नातक एवं स्नातकोत्तर की उपाधियाँ प्रदान करने का प्रावधान है। प्रत्येक शिक्षण सत्र में छः छः माह के दो सेमेस्टर होते है।

वर्तमान में विश्वविद्यालय के अंतर्गत दो संकाय, कृषि तथा पशुचिकित्सा एवं पशुपालन कार्यरत है। प्रत्येक संकाय में अलग अलग विभाग है। प्रत्येक विभाग के प्रमुख विभागाध्यक्ष होते है। कृषि संकाय में 12 और पशुचिकित्सा एवं पशुपालन संकाय में 17 विभाग है। कृषि संकाय के अंतर्गत 4 कृषि महाविद्यालय (ग्वालियर, सीहोर, इन्दौर, तथा खंडवा), 01 उद्यानिकी महाविद्यालय (मंदसौर) तथा पशुचिकित्सा एवं पशुपालन संकाय के अंतर्गत 01 महाविद्यालय (महू) विद्यमान है। दोनो संकायों के सभी महाविद्यालयों में वरीयता क्रम के आधार पर छात्र – छात्राओं को प्रवेश दिया गया है।

वर्ष 2009–10 से विश्वविद्यालय द्वारा कृषि संकाय के अंतर्गत 08 एवं उद्यानिकी के अंतर्गत 06 विषयों में स्नातकोत्तर कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। साथ ही चार विषयों में पी.एच.डी. कार्यक्रम भी चलाये जा रहे हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (आई.सी.ए.आर.) द्वारा अनुशंसित स्नातकोत्तर पाठ्क्रमों का विश्वविद्यालय द्वारा 2009–10 से अंगीकृत किया जा चुका है।

इस वर्ष स्नातकोत्तर शिक्षण हेतु एम.एससी. (कृषि) पाठ्यक्रम में 178 एवं एम.एससी. (उद्यानिकी) पाठ्यक्रम में 23 छात्रों को प्रवेश दिया गया। साथ ही पी.एच.डी. (कृषि) पाठ्यक्रम में 10 छात्रों को प्रवेश दिया गया। विश्वविद्यालय के अंतर्गत विभिन्न महाविद्यालयों के विभिन्न विभागों में स्नातकोत्तर शिक्षण की सुविधा है। महाविद्यालय की सभी कक्षायें आधुनिक दृश्य एवं प्रसार की सुविधाओं से युक्त है। छात्रों के उपयोग के लिये एरिस सेल में इन्टरनेट की सुविधा भी है तथा साथ ही विभिन्न विभागों में भी इन्टरनेट की सुविधा है।

(ब) पशुचिकित्सा एवं पशुपालन संकाय

राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर, के अंतर्गत पशुचिकित्सा एवं पशुपालन संकाय में एक पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, महू स्थित है, जो दिनांक 04.11.2009 से मध्यप्रदेश पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर के अधीन है ।

पशुचिकित्सा सुविधाऐं

गौरतलब है कि यहॉ का पशु चिकित्सालय (शैक्षणिक पशुचिकित्सा इकाई) मालवा का अभूतपूर्व गौरव है और निरंतर चौबीसों घंटे मूक पशुओं की सुश्रुशा में रत रहता हैं। इस चिकित्सालय में आधुनिक चिकित्सा उपकरण जैसे इसीजी, सोनोग्राफी, ब्लड ट्रांसफ्यूजन, लेजर, एक्स–रे, आई.सी.यू. इकाई की सहायता से अत्याधुनिक चिकित्सा की व्यवस्था है।

महाविद्यालय में एक अत्याधुनिक वातानुकुलित सेन्ट्रल डायग्नोस्टिक लेबोरेटरी है जिसमें मानव चिकित्सा की तरह समस्त आधुनिक जांचों व रोग परीक्षण की सुविधाएं मौजुद है। इसी तरह पशुचिकित्सालय परिसर में भी तुरंत परीक्षण हेतु एक क्लिनिकल लेबोरेटरी कार्यरत् है।

(स) क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

विभिन्न कृषि/उद्यानिकी/पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालयों में खेलकूद गतिविधियों के संचालन हेतु सुविधाएं एवं संसाधन उपलब्ध हैं तथा छात्रगण इन सुविधाओं का पूर्ण लाभ उठाते हैं एवं वर्ष भर खेलकूद गतिविधियों में अत्यधिक रूचि से प्रतिभागिता करते है। इस सत्र में भी विभिन्न महाविद्यालयों में

क्रीड़ा गतिविधियों का आयोजन किया गया जिसमें छात्र/छात्राओं ने सहभागिता दर्ज की और प्रतियोगिताओं में सफलता अर्जित की।

राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत वर्ष 2009–10 में विश्वविद्यालय की अन्तर महाविद्यालयीन खेलकूद प्रतियोगितायें कृषि महाविद्यालय, इंदौर, सीहोर एवं ग्वालियर में सम्पन्न कराई गयीं। जिसमें टेबल टेनिस, बैडमिटंन, कैरम, चैस (पुरूष/महिला), बॉलीवाल, खो–खो, कबड्डी एवं एथलैटिक्स का आयोजन किया गया । जिसमें कृषि महाविद्यालय खण्डवा की छात्रा अनीता वरडे ने 100 मी. 200 मी. एवं 400 मी. दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं गोलाफेंक, ऊँची कूद में कृषि महाविद्यालय, इन्दौर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा कबड्डी में कृषि महाविद्यालय, इंदौर तथा खो–खो में कृषि महाविद्यालय, ग्वालियर विजेता रहे । इस प्रतियोगिता में विजेता रहे विद्याार्थी अंतर–कृषि विश्वविद्यालयीन प्रतियोगिता में भाग लेंगे।

(द) छात्रवृत्ति एवं फेलोशिप

- विक्रमादित्य योजना के अर्न्तगत निर्धन मेधावी छात्रों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने हेतू प्रस्ताव प्रेषित की गई है।
- स्नातक स्तर के छात्रों को मेरिट कम मीन्स छात्रवृत्ति का प्रस्ताव भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली को प्रषित की गई है।
- नेशनल टेलेण्ट स्कॉलरशिप में छात्र/छात्राऐं सम्मिलित हुए ।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा वर्ष 2009–10 में कृषि संकाय में 21 एवं पशुचिकित्सा एवं पशुपालन संकाय में 10 छात्रों को स्नातकोत्तर अध्ययन् हेतु जूनियर रिसर्च फेलोशिप के लिए चयन हुआ है।

(इ) पुरूस्कार

- पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, महू के दो छात्रों को मेरिट के आधार पर एलेम्बीक कंपनी की ओर से एलेम्बीक स्क्रोल ऑफ ऑनर प्रदान किया गया एवं 10000/– तथा 750/– की नगद राशि भी प्रदान की गई।
- कृषि महाविद्यालय खण्डवा के पौध रोग वैज्ञानिक श्री बालकृष्ण पाटीदार द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र को महा कौशल विज्ञान परिषद, मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौधोगिकी परिषद एवं जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में मध्य क्षेत्रीय विज्ञान सम्मेलन द्वारा स्वर्ण पदक प्रदान कर उन्हे श्रेष्ठ युवा कृषि विज्ञानी निरूपित किया गया।

(एफ) अन्य गतिविधियां

प्लेसमेंट

- इस वर्ष विश्वविद्यालय द्वारा पहली बार प्रयास करके कृषि महाविद्यालय, ग्वालियर में बैंक ऑफ इण्डिया का केम्पस साक्षात्कार का आयोजन किया गया एवं उसमें 09 छात्र/छात्राओं का चयन किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय द्वारा अपने प्राध्यापकों तथा वेज्ञानिकों का कौशल उन्नयन अन्तर्गत विभिन्न प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतू प्रोत्साहित की जाती है। इस वर्ष लघु प्रशिक्षण हेतु 6 एवं समर/विन्टर स्कूल प्रशिक्षण हेतू 33 प्राध्यापक/वैज्ञानिकों को अनुमति प्रदान की गई।

सेमीनार/सिम्पोजियम

- समय–समय पर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक/प्राध्यापक अनुसंधान संगोष्ठी/सेमीनार में सक्रिय सहभागिता करते है तथा राष्ट्रीय स्तरों पर अपने शोध कार्यो के जरिये अपनी उपस्थिति दर्ज कराते रहते हैं।

विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिकों का व्याख्यान

विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिकों जैसे डॉ. पी.जी. अदशुले, निदेशक, राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केन्द्र, पुणे, डॉ. एस.पी. श्रीवास्तव, राष्ट्रीय समन्वयक, एन.ए.आई.पी., भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, डॉ. चरिअप्पा, प्रमुख वैज्ञानिक, डी.एस.आर., हैदराबाद, डॉ. एस.एल. मेहता, पूर्व कुलपति, महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर एवं सेवानिवृत्त उप महानिदेशक (शिक्षा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, डॉ. यू.एस. गौतम, आंचलिक परियोजना समन्वयक, जोन–7, जबलपुर आदि ने विश्वविद्यालय में समय–समय पर भ्रमण किया तथा महत्वपूर्ण व्याख्यान दिये।

सूचना एवं जन सम्पर्क

राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना दिनांक 19/08/08 को हुई। उसी समय से जन सम्पर्क कार्यालय ने अपने कार्य प्रारम्भ किया। इस अवधि में अनुसंधान एंव विश्वविद्यालय की उपलब्धियॉ, वैज्ञानिक गतिविधियों से सम्बन्धित समाचार, विश्वविद्यालय की खेलकूद प्रतियोगिता के समाचार, गणतंत्र दिवस से सम्बन्धित 50 से अधिक समाचार एंव अन्य समसामयिक जानकारियॉ आदि दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई ।

विभाग ने वर्ष 2009–10 में 01 पत्रकार वार्ता का आयोजन किया गया जिसमें सभी प्रमुख समाचार पत्र, मीडिया के प्रतिनिधि शामिल हुए। इसमें मा. कुलपति महोदय द्वारा विश्वविद्यालय के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी सामाचार पत्रों को दी गई ।

विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के द्वारा प्रसारित किए जाने वाले विज्ञापनों, जिसमें निमार्ण कार्य, नवीनीकरण एंव सामग्री क्रय करने की विज्ञप्तियाँ भाामिल हैं के 85 विज्ञप्तियां/विज्ञापन, विभाग के माध्यम से प्रेषित की गई ।

विश्वविद्यालय, कृषि एंव पर्यावरण से सम्बन्धित समाचारों का प्रतिदिन संकलन कर विश्वविद्यालय के अधिकारियों को सूचानार्थ प्रस्तुत किया गया । महत्वपूर्ण समाचारों, सूचनाओं के विश्वविद्यालय के सूचना पटल पर सार्वजनिक हित में प्रदर्शन की व्यवस्था की गई ।

दूरदर्शन पर समसामायिक वार्ताओं के प्रसारण हेतु वैज्ञानिकों से सम्पर्क कर व्यवस्था बनाने में सहयोग किया गया। विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं एवं प्रकाशनों हेतु सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई गई ।

इस विश्वविद्यालय द्वारा कृषि विजय पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया है। साथ ही अंग्रेजी एवं हिन्दी में विश्वविद्यालय की प्रोफाइल तैयार की गई है। जिसमें विश्वविद्यालय की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की गयी। विश्वविद्यालय के स्थापना उपरान्त अंग्रेजी में **आर.व्ही.एस.के.व्ही.व्ही.** न्यूज लेटर का भी प्रकाशन किया गया जिसमें विश्वविद्यालय की उपलब्धियाँ एवं कार्यकलापों का उल्लेख किया गया।

कृषि विषयक पत्र पत्रिकाओं के विश्वविद्यालय के विषय में आलेख, माननीय कुलपति जी के संदेश आदि भेजने की व्यवस्था की गई ।

2. अनुसंधान

- वर्ष 2009–10 में विश्वविद्यालय को बाह्य वित्तीय स्रोतों से कुल 18 परियोजनाएं स्वीकृत हुई जिनमें स्वीकृत राशि रू. **1551.70 लाख** है। इनमें से मुख्यतः अखिल भारतीय समन्वित मक्का अनुसंधान परियोजना, अखिल भारतीय समन्वित अंगूर अनुसंधान परियोजना, राष्ट्रीय कृषि नवाचार परियोजना, राष्ट्रीय नींदा खोज एवं निगरानी परियोजना, भूमि स्वास्थ्य एवं उर्वरकता प्रबंधन परियोजना, कार्बनिक खेती परियोजना, गुणवत्ता युक्त प्लांटिंग मटैरियल नर्सरी परियोजना, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, राष्ट्रीय कृषि विश्वविद्यालय प्रक्षेत्रों का आधुनिकीकरण एवं बीज संसाधन सुविधाओं का विकास की परियोजनाएं प्रमुख हैं। इनका विवरण निम्नानुसार है :

क्र.	परियोजना का शीर्षक	राशि (लाख में)
1	भूमि स्वास्थ्य एवं उर्वरकता प्रबंधन	180.00
2	कार्बनिक खेती	205.00
3	धार एवं झाबुआ जिले की असमतलीय असिंचित खेती के टिकाऊपन तथा जीवनोपार्जन के लिए	351.62
4	नोनी फल में सूजन विरोधी एवं प्रतिरोधात्मक गुणों का जानवरों में प्रायोगिक अध्ययन	9.99
5	राष्ट्रीय सूचना प्रणाली आधारित कीट प्रबंधन	6.21
6	चना में सूखा संबंधित लक्षणों क्यूटियला की मैपिंग एवं वैलिडेशन	11.56
7	बीजग्रम योजना	46.25
8	कृषि विश्वविद्यालय प्रक्षेत्रों का आधुनिकरण	225.00
9	बीज संसाधन सुविधाओं का विकास	286.05
10	राज्य कृषि विकास योजना से सहायता	80.20
11	अखिल भारतीय समन्वित अंगूर अनुसंधान परियोजना	1.06
12	अखिल भारतीय समन्वित मक्का अनुसंधान परियोजना	36.73

13	कृषि फसलों पर वातावरणीय प्रभाव का अध्ययन	4.84
14	राष्ट्रीय नींदा खोज एवं निगरानी	21.60
15	गुणवत्ता युक्त प्लांटिंग मटैरियल नर्सरी	72.00
16	पश्चिमी मध्यप्रदेश में औषधिय एवं सुगंधित फसलों के उत्पादन एवं प्रशिक्षण पर आधारित प्रदर्शन	5.39
17	मध्यप्रदेश में अपरम्परागत दलहनी फसलों में स्थानीय राइजोबियम की उपस्थिति का अध्ययन	8.20
	योग	**1551.7**

- बाह्य परियोजनाओं के अतिरिक्त विश्वविद्यालय को परामर्श प्रक्रिया प्रकोष्ठ द्वारा कपास, बी.टी. कपास, आलू, सोयाबीन, मूंगफली एवं चना फसलों पर अनुसंधान के लिये 13 परियोजनाएं प्राप्त हुई। जिनकी स्वीकृति कुल राशि रू. **61.14 लाख** है।
- विश्वविद्यालय द्वारा भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित **"बीज ग्राम योजना"** के अन्तर्गत वर्ष 2009–10 में 22 जिलों के कृषि विज्ञान केन्द्रों/अनुसंधान केन्दों/कृषि महाविद्यालयों के माध्यम से 5473 कृषकों के खेतों पर खरीफ में सोयाबीन, बाजरा, मूंग, अरहर एवं तिल की उन्नत किस्मों के बीजों का वृहद् रूप से उत्पादन किया। इसी प्रकार रबी में गेहूँ, चना, सरसों, धनिया एवं मसूर की उन्नत किस्मों के बीजों का वृहद् रूप से उत्पादन किया।

ब. प्रक्षेत्र

- विश्वविद्यालय द्वारा बीज अधिनियम में संस्तुत फसल किस्मों का आनुवांशिकी रखरखाव किया गया। खरीफ 2009 में सोयाबीन, मूँग, उड़द, मूँगफली, ज्वार एवं बाजरा का प्रजनक बीज क्रमशः 3266 क्वि., 17.49 क्वि., 8.81 क्वि., 46.0 क्वि., 12.55 क्वि. एवं 3.15 क्वि. का उत्पादन किया गया।
- विश्वविद्यालय द्वारा संकर बीज उत्पादन कार्यक्रम के अंतर्गत अरहर 650 किग्रा., मक्का 768 किग्रा., बाजरा 1486 किग्रा., ज्वार 80 किग्रा. एवं अरन्डी 300 किग्रा. संकर बीज उत्पादित किया गया। इसी प्रकार अरहर (आई.सी.पी.एच. 2043 ए, आई.सी.पी.एच. 2043 बी एवं आई.सी.पी 2671 आर) एवं ज्वार (आई.एम.एस. 9ए एवं आई.एम.एस 9बी) की पैत्रिक लाइन्स का आनुवांशिक रखरखाव किया गया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी

विश्वविद्यालय द्वारा दिनांक 23–24 दिसम्बर, 2009 को **''टिकाऊ खेती एवं जीवकोपार्जन सुरक्षा हेतु जैविक खेती''** पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन राष्ट्रीय जैविक खेती केन्द्र, गाजियाबाद के सहयोग से किया गया।

3. प्रसार शिक्षा/कृषि विज्ञान केन्द्र

कृषकों तक उन्नत तकनीक पहुंचाने तथा उनका सफल अंगीकरण सुनिश्चित करने हेतु विस्तार संचालनालय द्वारा प्रदेश के चार कृषि महाविद्यालयों (इंदौर, सीहोर, ग्वालियर एवं खण्डवा) एवं एक उद्यानिकी महाविद्यालय मदंसौर, 19 कृषि विज्ञान केन्द्र (झाबुआ, गुना, राजगढ, खण्डवा, ग्वालियर, मुरैना, खरगौन, धार, उज्जैन, शाजापुर, मंदसौर, श्योपुर, शिवपुरी, लहार (भिण्ड), अशोकनगर, दतिया, बडवानी,

नीमच एवं देवास) व आंचलिक एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों के माध्यम से विस्तार कार्यक्रम कार्यान्वित किये जा रहे हैं। वर्ष 2009–10 में संपादित कार्यक्रम निम्नानुसार है–

अ–	**कृषक प्रक्षेत्रों पर प्रदर्शन एवं अनुसंधान प्रयोग**	**क्षेत्रफल(हे.)**	**लाभान्वित कृषक**
1.	अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (दलहन),	89.4	224
2.	अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन तिलहन,	106.4	295
3.	अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (दलहन एवं तिलहन के अतिक्ति)	253.8	862
4.	अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (मक्का)	32	80
5.	अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (कपास)	125	312
6.	प्रक्षेत्र पर परीक्षण	146	760
7.	बीज ग्राम योजना	1054	5473

ब–	**प्रशिक्षण कार्यक्रम**	**संख्या**	**लाभान्वित कृशक**
1.	सेवाकालीन प्रशिक्षण	60	1361
2.	कृषक / कृषक महिला प्रशिक्षण	972	28215
3.	रोजगारन्मुखी प्रशिक्षण	60	1024

स–	**विस्तार गतिविधियॉ / कार्यक्रम**	**संख्या**	**लाभान्वित कृषक**
1.	वैज्ञानिक निदान दल भ्रमण	968	29025
2.	मासिक कार्यशाला	144	3600
3.	कृषकदलों द्वारा विश्वविद्यालय केन्द्रों का भ्रमण	512	3973
4.	किसान मेला	06	9850
5.	प्रक्षेत्र / किसान दिवस	98	3430
6.	विश्व खाद्य दिवस	1	29
7.	गाजर घास उन्मूलन दिवस	5	150
8.	प्रदर्शनी	22	6364
9.	पशुचिकित्सा शिविर	03	200
10.	फार्म क्लिनिक	70	82

द–	संचार माध्यम	संख्या	लाभान्वित कृशक
1.	त्रैमासिक समाचार पत्रक (के.वी.के.)	54	54000

उन्नत कृषि तकनीकी को प्रशिक्षण एवं अग्रिम पक्तिं प्रदर्शनों के माध्यम से कृषकों तक पहुचानें का कार्य विस्तार शिक्षा का प्रमुख अंग है। जिसे व्यापक स्तर पर विस्तार संचालनालय द्वारा आयोजित किया जा रहा है।

विस्तार कार्यक्रमों की विशेष उपलब्धियाँ

- विस्तार कार्यक्रमों की कड़ी में इस निदेशालय के अन्तर्गत आने वाले कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा छः जिलों में जिला स्तरीय मेलों का आयोजन किया गया जिसमें कृषि प्रदर्शनी, कृषि वैज्ञानिक परिचर्चा, फसल संग्रहालय अवलोकन एवं प्रक्षेत्र भ्रमण का भी समावेश रहा।
- अद्यतन कृषि तकनीकी को कृषकों तक हस्तान्तरित करने का कार्य इस निदेशालय द्वारा अग्रिम पक्तिं प्रदर्शन, कृषकों के खेतों पर अनुसंधान प्रयोगों एवं कौशल वृद्धि हेतु प्रशिक्षणों के माध्यम से सम्पन्न किया गया। उदाहरणार्थ – बीज ग्राम योजना के अन्तर्गत सोयाबीन, चना, गेहूँ, मक्का, फसलों की नवीन किस्मों के बीज उत्पादन कर कृषकों को बीज स्वालम्वीं बनाया जा रहा है।
- इसी प्रकार बेरोजगार ग्रामीण युवाओं, एवं महिलाओं में व्यावसायिक रूझान को बढ़ावा देने के लिए मधुमक्खी पालन, (ब्रायलर) मुर्गीपालन, बकरी पालन, ऑयस्टर मशरूम उत्पादन, केंचुआ खाद उत्पादन, सिलाई–कढ़ाई, प्रसंस्करण, फल एवं सब्जी परिरक्षण, मूल्य संवर्धन आदि विषयों पर कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से सघन प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये गये।
- विस्तार संचालनालय द्वारा रबी विशेषांक पत्रिका **"कृषि विजय"** अंक–1, रा.वि.कृ.वि.वि. समाचार पत्र (हिन्दी एवं अंग्रेजी), रा.वि.सि.कृ.वि.वि. प्रोफाइल, डायरी, कैलेण्डर का प्रकाशन इस वर्ष किया गया है।
- कृषि महाविद्यालय ग्वालियर में विस्तार कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषि महाविद्यालय, ग्वालियर द्वारा एक चल मृदा परीक्षण वाहन संचालित किया जाता है। जिसका उद्‌घाटन माननीय कृषि मंत्री महोदय द्वारा किया गया है। जिसमें वैज्ञानिक गण आसपास के गाँवों के कृषकों की भूमि का मृदा परीक्षण कर संतुलित उर्वरक की अनुशंसा प्रदान करते है।
- विस्तार संचालनालय द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कार्यशाला दिनांक 3–5 जून 2009 तक पूर्ण आंचलिक कार्यशाला दिनांक 2–4 सितम्बर 2009 के आयोजन किया गया जिसमें मध्य प्रदेश के सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों ने भाग लिया।

4. लेखा नियंत्रक

1. राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर का वर्ष 2008–09 का प्रारंभिक शेष (+) 959.47 लाख से प्रारंभ हुआ था। राज्य भाासन द्वारा चालू वित्त वर्ष मे समय पर अनुदान उपलब्ध कराने के कारण विश्वविद्यालय की आर्थिक स्थिति सामान्यतः संतोषप्रद है। शासन द्वारा वर्ष 2009–10 को माह दिसम्बर 2009 तक निम्नानुसार अनुदान उपलब्ध कराया गया है–

राशि लाखों में

क्रमांक	मद	प्रस्तावित राशि	दिसम्बर 2009 तक प्राप्त राशि लाख
1	कृषि आयोजना	307.32	230.49
2	कृषि आयोजनेत्तर	1900.00	1350.41
3	आदिवासी उप–योजना (अधोसंरचना)	87.00	76.99
4	आदिवासी उप–योजना (संधारण अनुदान)	269.98	178.32
5	विशेष घटक (अधोसंरचना)	130.00	97.50
6	विशेष घटक (संधारण अनुदान)	317.33	238.00
7	पशुपालन आयोजनेत्तर	312.00	234.00
योग		**3323.63**	**2405.71**

2. इस विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आने वाले समस्त महाविद्यालयों/इकाईयों को समस्त राशि उपलब्ध कराई जा रही है।

3. राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर के अधीन महाविद्यालय/ इकाईयों के कर्मचारियों, अधिकारियों को स्ववित्तीय पेंशन, सी.पी.एफ., अवकाश नगरीकरण आदि भुगतान की जा रही है।

4. विश्वविद्यालय के विभिन्न स्त्रोतों से मिलने वाली राशि के अतिरिक्त विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि प्रक्षेत्रों की अधोसंरचना विकसित कर तथा परामर्श एवं मूल्यांकन प्रक्रिया आदि के द्वारा आंतरिक स्त्रोंतो से आय में वृद्धि के प्रयास किये जा रहे हैं।

5. म.प्र. राज्य शासन के आदेश क्रमांक/बी–4/11/2009/14–2, दिनांक 12.09.2008 के द्वारा राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर की स्थापना हेतु अधोसंरचना विकास के लिये राशि रू. 54.69 करोड़ की स्वीकृति दी गई है। इसी प्रकार ग्राम कैथा (साड़ा क्षेत्र) में निजी स्वामित्व की भूमि को इस विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु अधिग्रहण करने के लिये मुआब्जा राशि 5.17 करोड़ जिला कलेक्टर, ग्वालियर द्वारा मॉग की गई है।